कृषि विज्ञान केन्द्र
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)
ई–न्यूज लेटर
जुलाई 2026, अंक: 27

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा "खेत बचाओ अभियान" का सफल आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 1 जून से 30 जून 2026 तक चलाए गए "खेत बचाओ अभियान" का मुख्य उद्देश्य किसानों में मृदा स्वास्थ्य संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना, भूमि की उर्वरता एवं उत्पादकता को लंबे समय तक बनाए रखना, संतुलित उर्वरक उपयोग तथा कम लागत एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए कृषकों को व्यापक रूप से जागरूक करना तथा आत्मनिर्भर बनाना था।

इस अभियान के दौरान केंद्र द्वारा सरदारशहर, रतनगढ़ एवं सुजानगढ़ तहसीलों के 27 गांवों में कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम, जागरूकता कार्यक्रम, समूह बैठकें, कृषक संगोष्ठियां एवं अन्य प्रसार गतिविधियों का आयोजन किया गया। अभियान में कृषि विभाग चूरू का भी सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता रही, जिसमें विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ समन्वय स्थापित कर किसानों तक कृषि संबंधी नवीनतम तकनीकी जानकारी पहुंचाई गई।अभियान के दौरान कृषि विशेषज्ञों द्वारा किसानों को बताया गया कि लगातार बढ़ते रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के असंतुलित उपयोग से मृदा स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है, इसलिए खेतों की उर्वरता बनाए रखने के लिए टिकाऊ एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाना आवश्यक है। विशेषज्ञों ने किसानों को हरी खाद के रूप में ढैंचा फसल का प्रयोग, खेतों में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ाने, वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद), बीजामृत एवं अन्य जैविक आदानों के उपयोग के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही किसानों को जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, जैव उर्वरकों का प्रयोग, फसल अवशेष प्रबंधन, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक उपयोग के महत्व के बारे में बताया गया।

प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रमों के दौरान कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित किया तथा खेत स्तर पर आने वाली समस्याओं पर चर्चा कर उनके समाधान के लिए वैज्ञानिक सुझाव दिए। किसानों को बताया गया कि स्वस्थ मिट्टी ही स्वस्थ फसल एवं बेहतर उत्पादन का आधार है तथा मृदा संरक्षण के लिए किसान अपने खेतों में जैविक एवं प्राकृतिक संसाधनों का अधिक से अधिक उपयोग करें।इस अभियान के अंतर्गत कुल 2425 किसानों से प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित किया गया, जिसमें महिला एवं पुरुष कृषकों की सक्रिय भागीदारी रही। इसके अतिरिक्त अभियान से संबंधित तकनीकी जानकारी, संदेश एवं गतिविधियों का प्रचार-प्रसार व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर एवं अन्य सोशल मीडिया माध्यमों के द्वारा भी किया गया, जिससे अधिक से अधिक किसानों तक जागरूकता संदेश पहुंच सके।

मूंग एवं मोठ की उन्नत उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 2 जून 2026 को गांव कामासर में "मूंग एवं मोठ की खेती की उन्नत तकनीक" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 23 किसानों ने भाग लिया।कार्यक्रम के दौरान श्री हरीश कुमार रछोया (विषय विशेषज्ञ, सस्य विज्ञान) ने किसानों को मूंग एवं मोठ की के उन्नत उत्पादन तकनीक के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने

किसानों को उन्नत एवं क्षेत्र के अनुकूल किस्मों का चयन, गुणवत्तापूर्ण बीज का उपयोग, बीज उपचार की आवश्यकता, बुवाई का उचित समय, बीज दर एवं कतार दूरी, पोषक तत्व प्रबंधन तथा खरपतवार नियंत्रण की वैज्ञानिक विधियों के बारे में विस्तार से बताया।प्रशिक्षण में दलहनी फसलों में समेकित फसल प्रबंधन (Integrated Crop Management) के महत्व पर चर्चा की गई। विशेषज्ञ द्वारा किसानों को जैव उर्वरकों द्वारा बीज उपचार, हरी खाद के रूप में ढैंचा फसल का उपयोग, वर्मी कम्पोस्ट एवं अन्य जैविक खादों के प्रयोग से मृदा स्वास्थ्य सुधार की जानकारी दी गई।इसके साथ ही मूंग एवं मोठ में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोगों की पहचान, समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन, सिंचाई प्रबंधन, फसल की बेहतर वृद्धि हेतु आवश्यक कृषि क्रियाओं तथा कटाई एवं भंडारण की वैज्ञानिक विधियों पर भी किसानों के साथ चर्चा की गई।

जलाशयों एवं टैंकों की सफाई व रखरखाव पर प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 3 जून 2026 को गांव पन्नूसर में "जल तालाबों एवं टैंकों की सफाई तथा रखरखाव" विषय पर एक संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में डॉ. प्रवीण, विषय विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी) द्वारा प्रतिभागियों को ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण संरचनाओं जैसे खेत , तलाई , जल होद, टैंक एवं अन्य जल संग्रहण इकाइयों के वैज्ञानिक रखरखाव के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण के दौरान डॉ. प्रवीण ने जल संग्रहण संरचनाओं की नियमित सफाई, गाद (सिल्ट) की समय-समय पर निकासी, जल की गुणवत्ता बनाए रखने के उपाय, टैंकों की दीवारों एवं तल की मरम्मत, रिसाव रोकने की तकनीक तथा संरचनाओं की कार्यक्षमता एवं उपयोगिता बढ़ाने के वैज्ञानिक तरीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जल स्रोतों का उचित रखरखाव करने से जल की उपलब्धता बढ़ाने के साथ-साथ सिंचाई दक्षता में भी सुधार किया जा सकता है। प्रशिक्षण में वर्षा जल संचयन, जल संरक्षण तकनीक, जल का कुशल उपयोग एवं जल संरचनाओं के आसपास स्वच्छता बनाए रखने के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की गई।प्रतिभागियों को जलाशयों एवं टैंकों में गंदगी एवं प्रदूषण नियंत्रण, सुरक्षित जल भंडारण, समयबद्ध रखरखाव तथा जल संरचनाओं की दीर्घकालिक उपयोगिता बनाए रखने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक उपायों की जानकारी दी गई।

कृषक महिला स्वयं सहायता समूहों हेतु बैठक आयोजित

स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर ,राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) के संयुक्त तत्वाधान में गांव उड़सर लोड़ेरा में दिनांक 4 जून 2026 को एक समूह बैठक(group meeting) का आयोजन किया गया। बैठक का मुख्य उद्देश्य कृषि एवं उससे संबंधित विभिन्न उद्यमों को बढ़ावा देकर महिलाओं में उद्यमिता विकास को प्रोत्साहित करना रहा। इस कार्यक्रम में राजीविका से जुड़ी 32 प्रसार कार्यकर्ताओं

एवं महिला सदस्यों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। इस दौरान प्रतिभागियों को कृषि आधारित उद्योगों जैसे दुग्ध उत्पादन, बकरी पालन, पोषण वाटिका, खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। कृषि विज्ञान केंद्र के विशेषज्ञों द्वारा समूह आधारित व्यवसाय, विपणन के अवसर, सरकारी योजनाओं से जुड़ाव एवं आय बढ़ाने के विभिन्न उपायों पर चर्चा की गई। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, स्वरोजगार अपनाने एवं समूह के माध्यम से आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया।कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए तथा कृषि आधारित उद्यमों को अपनाने में रुचि दिखाई।

समेकित फसल प्रबंधन तकनीकों पर प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 4 जून 2026 को " बाजरा, मूंग, ग्वार एवं तिल की समेकित फसल प्रबंधन (Integrated Crop Management Practices)" विषय पर संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में ग्राम पन्नूसर एवं हुडेरा के किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर खरीफ फसलों के वैज्ञानिक उत्पादन एवं प्रबंधन की उन्नत तकनीकों की जानकारी प्राप्त की।कार्यक्रम में श्री हरीश कुमार रछोया (विषय विशेषज्ञ, सस्य विज्ञान) ने किसानों को खरीफ फसलों के वैज्ञानिक उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समेकित फसल प्रबंधन अपनाकर उत्पादन लागत में कमी लाने के साथ-साथ फसल की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। प्रशिक्षण के दौरान उन्नत एवं प्रमाणित बीजों का चयन, समय पर बुवाई, बीजोपचार, समेकित खरपतवार प्रबंधन (IWM), समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM), संतुलित एवं मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक प्रबंधन, जल संरक्षण एवं नमी प्रबंधन, फसल चक्र अपनाने तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग जैसी वैज्ञानिक तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की गई।

नर्सरी स्थापना एवं पौध रोपण विधि विषय पर प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 8 जून 2026 को गांव लधासर एवं दिनांक 19 जून 2026 को गांव गाजूसर में नर्सरी स्थापना एवं लेआउट, गड्ढा खुदाई तथा पौध रोपण विधि विषय पर किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दोनों प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कुल 56 किसानों ने भाग लिया।उद्यान एवं बागवानी विशेषज्ञ डॉ. अजय कुमावत ने बताया कि गुणवत्तापूर्ण पौध उत्पादन एवं सफल पौध स्थापना के लिए नर्सरी प्रबंधन में वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाना अत्यंत आवश्यक है एवं सही लेआउट, उचित गड्ढा आकार, पोषक तत्व प्रबंधन एवं वैज्ञानिक रोपण विधियों से पौधों की वृद्धि एवं जीवित रहने की क्षमता में वृद्धि होती है। उनके द्वारा किसानों को वैज्ञानिक विधि से नर्सरी स्थापना, उचित लेआउट निर्धारण, पौध उत्पादन के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं, भूमि चयन, गड्ढा खुदाई की वैज्ञानिक तकनीक, पौधों की उचित दूरी एवं सही समय पर पौध रोपण के बारे में प्रशिक्षित किया गया |

देसी (DAESI) डिप्लोमा बैच-8 के समापन समारोह का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र सभागार में दिनांक 10 जून 2026 को डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन सर्विसेज फॉर इनपुट डीलर्स (DAESI) बैच-8 के समापन समारोह आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वी.के. सैनी ने कहा कि DAESI प्रशिक्षण का उद्देश्य केवल प्रमाण-पत्र प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे जागरूक एवं जिम्मेदार कृषि आदान विक्रेताओं का निर्माण करना है, जो किसानों को वैज्ञानिक एवं संतुलित सलाह देकर उनकी आय बढ़ाने तथा टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। उन्होंने कहा कि इनपुट डीलर्स किसानों के सबसे निकट संपर्क में रहते हैं, इसलिए उनकी जिम्मेदारी है कि वे उर्वरकों, बीजों एवं कृषि रसायनों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग के संबंध में सही मार्गदर्शन दें तथा किसानों को नवीन कृषि तकनीकों, फसल सुरक्षा, मृदा स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक करें। मुख्य अतिथि डॉ. राजकुमार कुलहरी, परियोजना निदेशक, आत्मा चुरु ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रशिक्षित बीज एवं कृषि आदान विक्रेता कृषि विस्तार तंत्र की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। वे किसानों को गुणवत्तापूर्ण कृषि आदान उपलब्ध कराने के साथ-साथ वैज्ञानिक सलाह देकर उनकी समस्याओं के समाधान में सहयोग करेंगे। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की कि वे प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान का उपयोग समाज एवं किसानों के कल्याण के लिए करें तथा कृषि क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक बनें। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) देवेंद्र मोहन, समकुलाधिपति आई. ए. एस. ई. मानित विश्वविद्यालय सरदारशहर ने कहा कि कृषि क्षेत्र में तेजी से बदलती तकनीकों और चुनौतियों के बीच प्रशिक्षित इनपुट डीलर किसानों तक सही जानकारी पहुंचाने की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। समारोह में सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर बधाई दी गई तथा उन्हें भविष्य में किसानों के हित में समर्पित भाव से कार्य करने, हेतु प्रेरित किया गया |

प्रोटीन एवं आयरन युक्त आहार निर्माण विषय पर प्रशिक्षण आयोजित

दिनांक 11 जून 2026 को गांव राणासर बीकान में बालिकाओं एवं महिलाओं के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा प्रोटीन एवं आयरन युक्त आहार निर्माण विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में कुल 23 बालिकाओं एवं महिलाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान विषय विशेषज्ञ डॉ. रमन जोधा (विषय विशेषज्ञ, गृह विज्ञान) ने संतुलित एवं पोषणयुक्त आहार के महत्व के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि किशोरियों एवं महिलाओं के लिए शरीर की वृद्धि, रक्त निर्माण, रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं बेहतर स्वास्थ्य के लिए प्रोटीन, आयरन, विटामिन एवं खनिज तत्वों से भरपूर आहार का नियमित सेवन आवश्यक है। उन्होंने प्रतिभागियों को उच्च प्रोटीन एवं आयरन युक्त खाद्य पदार्थों जैसे अंकुरित अनाज, मूंग, मोठ, चना, दालें, हरी पत्तेदार सब्जियां एवं अन्य स्थानीय खाद्य पदार्थों के पोषण महत्व के बारे में बताया। अंकुरण प्रक्रिया से होने वाले पोषण संबंधी लाभों की जानकारी देते हुए बताया कि अंकुरित अनाज एवं दालों में पोषक तत्वों

की उपलब्धता बढ़ जाती है तथा ये स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभकारी होते हैं।प्रशिक्षण के दौरान कम लागत में स्थानीय उपलब्ध खाद्य पदार्थों का उपयोग कर हाई प्रोटीन युक्त विभिन्न व्यंजनों जैसे अंकुरित अनाज की चाट, मूंग-मोठ-चना से निर्मित पौष्टिक व्यंजन, दाल आधारित रेसिपी एवं अन्य आयरन एवं प्रोटीन समृद्ध आहार तैयार करने की विधियों के बारे में प्रशिक्षित किया गया ।

बायो फोर्टीफाइड बाजरे की उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 12 जून 2026 को बायो फोर्टीफाइड बाजरे की उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में कुल 25 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान केंद्र के विषय विशेषज्ञ (शस्य विज्ञान) श्री हरीश कुमार रछोया ने बायो फोर्टीफाइड बाजरे के महत्व एवं इसकी वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि बायो फोर्टीफाइड बाजरे की किस्मों में सूक्ष्म पोषक तत्वों, विशेष रूप से लौह (आयरन) एवं जिंक जैसे खनिज तत्वों की मात्रा अधिक होती है, जो मानव पोषण एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को बायो फोर्टीफाइड बाजरे की उन्नत किस्मों का चयन, बीज उपचार, खेत की तैयारी, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, उचित बुवाई समय एवं दूरी, खरपतवार प्रबंधन, समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन तथा वैज्ञानिक कटाई एवं भंडारण तकनीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को बायो फोर्टीफाइड किस्मों के उत्पादन को बढ़ावा देने एवं पोषण सुरक्षा में इनके योगदान के बारे में प्रशिक्षित किया।

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 15 एवं 16 जून 2026 को स्वच्छ दुग्ध उत्पादन तकनीक विषय पर क्रमशः गांव उड़सर एवं बंधनाउ उतरादा में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया | प्रशिक्षण के दौरान विषय विशेषज्ञ पशुपालन श्री श्याम बिहारी ने पशुपालकों को स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के विभिन्न वैज्ञानिक पहलुओं की जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि गुणवत्तापूर्ण दूध उत्पादन के लिए पशुओं के स्वास्थ्य प्रबंधन, संतुलित आहार, स्वच्छ एवं आरामदायक पशु आवास, दुग्ध दोहन की उन्नत विधियों तथा दुग्ध उपकरणों एवं बर्तनों की उचित स्वच्छता का विशेष महत्व है। उन्होंने पशुपालकों को दुग्ध दोहन से पूर्व पशु के थन एवं आसपास के क्षेत्र की साफ-सफाई, दूध निकालने के दौरान स्वच्छता मानकों का पालन, दूध के उचित संग्रहण एवं संरक्षण की उन्नत तकनीकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

मूंग की उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 18 से 21 जून 2026 तक "मूंग की उत्पादन तकनीक (Production Technology of Mung Bean)" विषय पर संस्थागत प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को मूंग की उन्नत उत्पादन तकनीकों से अवगत कराकर कम लागत में अधिक एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षित करना था। प्रशिक्षण के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के विषय विशेषज्ञ (शस्य विज्ञान) श्री हरीश कुमार रछोया ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि मूंग एक अल्पावधि की प्रमुख दलहनी फसल है, जो कम पानी में भी अच्छी उपज देने के साथ-साथ भूमि की उर्वरता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने किसानों को उन्नत किस्मों के चयन, बीजोपचार ,समय पर बुवाई, उचित बीज दर , संतुलित

उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार नियंत्रण तथा वैज्ञानिक सिंचाई प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी। किसानों को मूंग की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट एवं रोगों की पहचान, उनके लक्षण तथा समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM) के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही मौसम आधारित फसल प्रबंधन, सूक्ष्म पोषक तत्वों का महत्व, कटाई के उचित समय, दानों के सुरक्षित भंडारण तथा टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाने पर भी विशेष जोर दिया गया। किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र के प्रदर्शन प्रक्षेत्र एवं विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का फील्ड विजिट भी कराया गया। भ्रमण के दौरान किसानों ने आधुनिक कृषि तकनीकों तथा विभिन्न प्रदर्शन प्लॉटों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया। प्रशिक्षण के उपरांत चयनित किसानों को मूंग बीज की उन्नत किस्म MH-1142 के 113 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगभग 45 हेक्टेयर क्षेत्रफल में लगाने हेतु उपलब्ध कराए गए। ये प्रदर्शन सरदारशहर, रतनगढ़ एवं सुजानगढ़ तहसील के चयनित गांवों मालसर, देवीपुरा, बासीना में लगवाए गए । प्रदर्शनों का उद्देश्य किसानों को उन्नत किस्म की उत्पादन क्षमता, अनुशंसित वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों एवं बेहतर फसल प्रबंधन का खेत स्तर पर प्रदर्शन कराना था।

पीएम किसान सम्मान निधि की 23वीं किस्त का लाइव प्रसारण

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा दिनांक 20 मार्च 2026 को केंद्र के सभागार में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत 23वीं किस्त के हस्तांतरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किसानों को दिखाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री पवन कुमार मीणा, नायब तहसीलदार, सरदारशहर ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना देश के किसानों की आर्थिक सशक्तता की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे सभी सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ लें, समय-समय पर अपनी ई-केवाईसी एवं भूमि अभिलेखों का सत्यापन कराते रहें तथा आधुनिक एवं वैज्ञानिक कृषि तकनीकों को अपनाकर अपनी आय बढ़ाने का प्रयास करें। इस अवसर पर कृषि उपज मंडी समिति के अधिकारी एवं कर्मचारीगण भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अधिकाधिक जानकारी किसानों तक पहुँचाने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक के माध्यम से पूर्व सूचना प्रसारित की गई, जिससे अधिकाधिक किसान इस लाइव प्रसारण से जुड़ सके और योजना का लाभ प्राप्त करने संबंधी जानकारी हासिल कर सके। कार्यक्रम के दौरान किसानों ने प्रधानमंत्री के संबोधन को ध्यानपूर्वक सुना तथा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से जुड़ी नवीनतम जानकारियों से अवगत हुए। इस अवसर पर देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किसानों को संबोधित करते हुए योजना से संबंधित

महत्वपूर्ण जानकारी एवं कृषि क्षेत्र के विकास पर विचार साझा किए गए।कार्यक्रम में उपस्थित किसानों के साथ-साथ दूरस्थ गांवों में रह रहे कृषकों को भी तकनीकी माध्यम से जोड़ा गया। इस आयोजन में कुल 198 कृषक एवं कृषक महिलाएं लाभान्वित हुई । कार्यक्रम के दौरान किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत मिलने वाली सहायता, पात्रता एवं लाभों के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की तथा उनकी शंकाओं का समाधान किया गया।

अगेती सब्जी उत्पादन तकनीक पर कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 20 जून 2026 को " अगेती मौसम में सब्जी उत्पादन तकनीक" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 26 कृषकों ने भाग | उद्यान एवं बागवानी विशेषज्ञ डॉ. अजय कुमावत ने बताया कि खरीफ मौसम में किसान भिंडी, ग्वारफली, लोबिया, ककड़ी, टिंडा, लौकी, तुरई एवं अन्य बेलवर्गीय सब्जियों की अगेती बुवाई करके एवं उन्नत तकनीक से खेती कर अच्छा उत्पादन एवं समय पर सब्जियों की बुवाई एवं उचित प्रबंधन अपनाने से किसान बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कृषकों को चूरू जिले की जलवायु एवं परिस्थितियों के अनुरूप प्रारंभिक मौसम में सब्जी उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकों के बारे में विस्तारपूर्वक बताकर, उन्नत किस्मों का चयन, बीज उपचार, पौध तैयार करना, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई व्यवस्था तथा कीट एवं रोग नियंत्रण की वैज्ञानिक विधियों के बारे में भी जानकारी दी।उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान कृषकों ने सब्जी उत्पादन से संबंधित समस्याओं पर चर्चा की तथा विशेषज्ञ से समाधान प्राप्त किए।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री हरीश कुमार रछोइया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) श्री श्याम बिहारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुपालन) डॉ अजय कुमावत, विषय वस्तु विशेषज्ञ (बागवानी) डॉ प्रवीन, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी)	डॉ रमन जोधा, विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) Designed श्री सुनील कुमार वी वी (स्टेनो)	डॉ वी के सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर चुरु -1

AJAY PATI TRIPATHI

Digitally signed by AJAY PATI TRIPATHI
Date: 2026.08.17 16:12:50 +05'30'

DR.VINOD KUMAR SAINI

Digitally signed by DR.VINOD KUMAR SAINI
Date: 2026.08.17 16:08:16 +05'30'